जो कहूं कई कोट बेर, तो केहेना एता ही खसम।
जब कछू तुम हीं करोगे, तब केहेसी आए हम।। ४८ ।।

मैं करोड़ों बार भी कहूं तो इतना ही कहना है कि जब आप कृपा करोगे तो आपके सामने आकर हम आपसे बात करेंगे।

अब तो केहेना कछू ना रह्या, ऐसी अंतराए करी खसम।
जब तुम जगाए बैठाओगे, तब केहेसी आए हम।। ४९ ।।

अब तो कहने को कुछ रहा ही नहीं, ऐसी जुदाई आपने करदी है। आप ही जागृत करके बिठाओगे तब हम आकर कहेंगे।

हम में जो कछू रख्या होता, तो इत केहेते तुमको हम।
सो तो कछुए ना रह्या, अब कहा कहूं खसम।। ५० ।।

हमारे अन्दर यदि कुछ बात होती तो तुम्हारे आगे मैं रोती। अब ऐसा तो कुछ रहा ही नहीं, तो अब मैं क्या कहूं?

भला जो कछू जान्या सो किया, इन झूठी जिमी में आए।
जब कछू उमेद देओगे, तब कहूंगी आस लगाए।। ५१ ।।

मैंने संसार में आकर जो अच्छा समझा, वह किया। अब आप ही कुछ दिलासा दोगे तो आशा लेकर आप से कहूंगी।

तुम किया होसी हम कारने, पर ए झूठी जिमी निरास।
ऐसा दिल उपजे पीछे, क्यों ले मुरदा स्वांस।। ५२ ।।

तुमने हमारे वास्ते ही यह खेल बनाया होगा, लेकिन यह माया का संसार निराशा से भरा है। ऐसी निराशा दिल में आने के बाद यह लगता है कि मैं जिन्दा क्यों हूं?

एक आह स्वांस क्यों ना उड़े, सो भी हुआ हाथ धनी।
बात कही सो भी एक है, जो कहूं इनथें कोट गुनी।। ५३ ।।

एक ठण्डी आह भरने से सांस निकल जानी चाहिए, परन्तु वह भी आपके हाथ होने से नहीं निकली बात भी कही तो एक ही, चाहे मुख से करोड़ों बार कह लूं।

महामत कहे मैं सरमिंदी, सब अवसर गई भूल।
ऐसी इन जुदागी मिने, क्यों कहूं करो सनकूल।। ५४ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि मैं शर्मिन्दी हूं, क्योंकि मैं सब अवसरों पर भूल गई, इसलिए मुझे लज्जा आती है। अब कैसे कहूं कि इस जुदाई को दूरकर अपने सामने बुलाओ।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ५४ ॥

मैं खुदी काढ़े का इलाज

हम लिए कौल खुदाए के, हक के जो परवान।
लई कई किताबें साहेदियां, कई हदीसें फुरमान।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हमने पारब्रह्म के वचनों को ग्रहण करके उनका पालन किया। कई धर्म ग्रन्थों, कुरान और हदीसों से गवाहियां लीं।

Nijanand App

कई साखें सास्त्रन की, कई साखें साधों की बान।
ए ले ले रूह को दृढ़ करी, आखिर वसीयत नामें निदान।। २ ।।

कई शास्त्रों की और कई साधुओं की वाणियों से गवाहियां लीं। आखिर मक्का से आए वसीयतनामों से आत्मा को दृढ़ता हो गई।

जाहेर बाहेर बातून, अंदर अंतर तुम।
कहूं जरे जेती जाएगा, नहीं खाली बिना खसम।। ३ ।।

जाहिरी में बाहर, अन्दर और बातून में सब जगह पर आप ही हैं। कोई थोड़ी जगह भी आपके बिना खाली नहीं है।

सब ठौरों सुध तुम को, कछू छूट न तुम इलम।
ए सक मेट बेसक तुम करी, कछू न बिना हुकम खसम।। ४ ।।

आपकी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ने साफ समझा दिया कि आपको सब जगह का इलम है। धनी! आपके हुकम के बिना कुछ भी नहीं है। यह सब संशय आपके ज्ञान ने मिटाकर बेशक कर दिया।

जरा न हुकम सुध बिना, सबन के दम दम।
साइत न खाली पाइए, बिना हुकम खसम।। ५ ।।

सब मानवों के अन्दर क्या है? आपके हुकम को सब सुध है। आपके हुकम के बिना एक पल भी यहां नहीं बीतता।

एते दिन मैं यों जान्या, मैं बैठी नाहीं के माहें।
तो इत का सन्देसा, हक को पोहोंचत नाहें।। ६ ।।

अभी तक मैं संसार में बैठकर यही जानती थी कि यहां का सन्देश आप तक पहुंचता नहीं है।

सो तेहेकीक तुम कर दिया, जो खेल नूर से उपजत।
इलम खुदाई हुकम बिना, कहूं खाली न पाइए कित।। ७ ।।

अब आपने यह यकीन दिला दिया कि जो ब्रह्माण्ड अक्षर से पैदा होते हैं उन सबमें आपके इलम और हुकम के बिना कहीं कुछ नहीं होता।

सांच झूठ बड़ी तफावत, ज्यों नाहीं और है।
सो हुकमें खेल बनाए के, सत गिरो को देखावें।। ८ ।।

सत्य और झूठ में बड़ा फर्क है जैसे 'नहीं' और 'है' में, अर्थात् निराकार और अखण्ड में आपके हुकम ने ऐसा झूठ का खेल बनाया और सच्ची ब्रह्मसृष्टियों को दिखाया।

बनाए कबूतर खेल के, ज्यों देखावे दुनियां को।
यों देखावें सत गिरो को, ए जो पैदा कुंन सों।। ९ ।।

जैसे बाजीगर खेल में कबूतर बनाकर दुनियां को दिखाता है, उसी तरह से 'कुंन' कहकर यह खेल पैदा किया और ब्रह्मसृष्टियों को दिखा रहे हो।

हम बैठे वतन कदम तले, तहां बैठे खेल देखत।
तित ख्वाब से सन्देसा, तुमें क्यों न पोहोंचत।। १० ।।

हम परमधाम में आपके चरणों के तले बैठकर खेल देख रहे हैं। उसी तरह से सपने से हमारा सन्देश आप को क्यों नहीं पहुंचता?

Nijanand App

ए इलम हकें दिया, किया नाहीं थें मुकरर हक।
रूहअल्ला महंमद मेहेर थें, कहूं जरा न रही सक।। ११ ।।

आपके इलम ने यह सत्य सिद्ध कर दिया कि आप निराकार से अलग अखण्ड शुद्ध साकार हैं तथा श्यामा महारानी (श्री देवजन्द्रजी) और मुहम्मद साहब की मेहर से अब जरा भी संशय नहीं रह गया।

हम बैठे लैलत-कदर में, संदेसा पोहोंचावें तुम।
इलम सूरत हमारी रूह की, पोहोंची चाहिए खसम।। १२ ।।

हम इस मोह की रात्रि में संसार में बैठकर आपको सन्देश पहुंचाते हैं। हमारी आत्मा का ज्ञान और ध्यान (सुरता) आप तक पहुंचना चाहिए।

ए तेहेकीक तुम कर दिया, मैं तो बैठी बीच नाहें।
इन विध खेल खेलावत, हक नाहीं के माहें।। १३ ।।

यह आपने निश्चित कर दिया है कि मैं झूठे संसार में बैठी हूं और आप इस तरह से झूठे संसार का खेल खिला रहे हैं।

अब धनी जानो त्यों करो, पर इत कहूं कहूं रूह तरसत।
कोई कोई चाह जो उठत है, सो हकै उपजावत।। १४ ।।

हे धनी! अब आप जैसा ठीक समझें वैसा करें, परन्तु यहां कभी-कभी हमारी आत्मा तरसती है। जो कुछ इच्छा उठती है वह भी आप कराते हो।

मैं तो बीच नाहीं के, मोहे खेल देखाया जड़ मूल।
ताथें जानो त्यों करो, सरमिंदी या सनकूल।।१५।।

मैं तो झूठे संसार में हूं और मुझे खेल भी शुरू से झूठा दिखाया है। अब आप जैसा जानें तैसा करें। चाहे आप मुझे प्रसन्न करें या शर्मिन्दा करें।

अब क्या करूं किन सों कहूं, कोई रह्या न केहेवे ठौर।
ए भी कहावत तुमहीं, कोई नाहीं तुम बिना और।। १६ ।।

मैं अब क्या करूं, किससे कहूं? कोई ठिकाना ही नहीं रहा। यह भी आप ही कहलाते हैं। आपके बिना दूसरा कोई नहीं है।

बिन फुरमाए हक के, दिल जरा न उपजत।
तो क्यों दिल ऐसा आवत, जो हक मांग्या न देवत।। १७ ।।

बिना आपके हुकम के हमारे दिल के अन्दर किसी भी चीज की इच्छा नहीं होती है। हमारे दिल में ऐसा क्यों आता है कि आप मांगने से देते नहीं हैं?

हक उपजावत देवे को, सो हकै देवनहार।
मैं दोष हक का देख के, क्यों होत गुन्हेगार।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज देने के वास्ते ही मन में चाहना पैदा करते हैं और वही सामर्थ्य देने वाले हैं। अब 'श्री राजजी का दोष है', ऐसा कहकर मैं गुनहगार क्यों बनूं?

उपजे उपजावे सब हक, हक देवें दिलावें।
मैं जो करत गुन्हेगारी, सो बीच काहे को आवे।। १९ ।।

मन में जो चाहना होती है धनी आप ही पैदा कराते हो। आप ही देते दिलवाते हो। तो इस बीच, मैं मांगकर क्यों गुनहगार बनूं?

Nijanand App

हकें पोहोंचाई इन मजलें, और दोस हक को देवत।
एही मैं मारी चाहिए, जो बीच करे हरकत।। २० ।।

धनी आपने मुझे यहां तक पहुंचा दिया है कि मैं आपको भी दोषी ठहराने लगी। इसी 'मैं' और 'अहंकार' को मारना चाहिए जो बीच में रुकावट (हरकत) डालती है।

मैं तो बीच नाहीं मिने, सो हक को पोहोंचत नाहें।
सो बीच दिल के बैठके, गुनाह देत रूह के तांए।। २१ ।।

मैं तो इस झूठे संसार में हूं, इसलिए मेरी पहुंच आप तक नहीं है, लेकिन मेरे दिल के अन्दर यह 'मैं' (अहंकार) बैठकर मेरी आत्मा को गुनहगार बनाती है।

मैं मैं करत मरत नहीं, और हक को लगावे दोस।
अब मेहेर हक ऐसी करें, जो इन मैं थें होऊं बेहोस।। २२ ।।

यह मैं जो 'मैं मैं' करती रहती हूं और मेरी 'मैं' (अहंकार) समाप्त होती नहीं है। उल्टा धनी पर दोष लगाती हूं। अब धनी आप ही ऐसी कृपा करें तो यह मेरी 'मैं' (अहंकार) छूट जाए।

झूठ न भेदे सांच को, सांच अंग सत साबित।
बाहेर उपली अंधेर देखाए के, होए जात असत।। २३ ।।

झूठ सत्य को नहीं तोड़ सकता, क्योंकि सच्चे अंग अखण्ड होते हैं। बाहर और ऊपर से माया दिखाकर सब झूठ जैसा ही लगता है।

ए जो फना सब झूठ है, जो ऊपर से देखाया।
सो क्यों भेदे हक को, जो नाहीं असत माया।। २४ ।।

यह झूठा संसार जो आपने हमें दिखाया है और जो झूठी माया है, वह निराकार को छोड़कर अखण्ड में कैसे जा सकती है?

सत को सत भेदत है, बीच झूठ के हक।
ए सन्देसा तब पोहोंचही, जब रूह निपट होए बेसक।। २५ ।।

सत ब्रह्मसृष्टि ही आप तक पहुंच सकती है। जो ब्रह्मसृष्टियां अब इस झूठे संसार में हैं, जब इन ब्रह्मसृष्टियों के संशय मिट जाएं तभी इनका यहां से सन्देश आप तक पहुंच सकता है।

ए सांच सन्देसा हक को, तोलों न पोहोंचत।
गेहेरा जल है मैंय का, आड़ा जो असत।। २६ ।।

ब्रह्मसृष्टियों का सन्देश संसार से तब तक आपको नहीं पहुंचेगा जब तक इस झूठी 'मैं' का (अहंकार का) परदा नहीं उड़ता।

सो मैं मैं झूठी दिल पर, जब लग करे कुफर।
सत सन्देसा तौहीद को, तोलों पोहोंचे क्यों कर।। २७ ।।

यह झूठी 'मैं मैं' जब तक दिल में अहंकार लिए बैठी है तब तक आत्मा का सन्देश धनी को कैसे पहुंचे?

ए मैं मैं क्यों ए मरत नहीं, और कहावत है मुरदा।
आड़े नूर-जमाल के, एही है परदा।। २८ ।।

यह 'मैं' जो मुर्दा कहलाती है और फिर भी 'मैं' (अहंकार) मरता क्यों नहीं? क्योंकि यही 'मैं' (अहंकार) मेरे और धनी के बीच में परदा है।

Nijanand App

ए पट नीके पाइया, जो मैं को उड़ावे कोए।
ए दृढ़ हकें कर दिया, अब जुदा हक से होए।। २९ ।।

अब मैंने इस अहं के परदे को अच्छी तरह से जान लिया। अब कोई इस अहं के परदे को उड़ा दे, परन्तु धनी ने यह निश्चित कर दिया है कि यह परदा (अहं का) उनके हुकम के बिना नहीं हटेगा।

मारा कह्या काढा कह्या, और कह्या हो जुदा।
एही मैं खुदी टले, तब बाकी रह्या खुदा।। ३० ।।

मैं कहती हूं कि मैंने 'मैं' (अहं) को मार दिया, निकाल दिया, अलग कर दिया पर इन शब्दों में भी जो 'मैं' आई (मैंने कर दिया इत्यादि) यदि हट जाए तो फिर बाकी धनी ही रह जाते हैं।

पेहेले पी तूं सरबत मौत का, कर तेहेकीक मुकरर।
एक जरा जिन सक रखे, पीछे रहो जीवत या मर।। ३१ ।।

इस 'मैं' (अहं) को मिटाने के लिए पहले मौत का शर्बत पी और तुम्हें यह निश्चित हो जाए कि तुम्हारा अहं समाप्त हो गया है तो एक जरा सा भी संशय धनी के प्रति मत रखो। उसके बाद संसार में जीना और मरना तुम्हारे लिए एक जैसा हो जाएगा।

एही पट आड़े तेरे, और जरा भी नाहें।
तो सुख जीवत अर्स का, लेवे ख्वाब के माहें।। ३२ ।।

यही 'मैं' (अहं) का परदा आत्मा और धनी के बीच है और कुछ भी नहीं है। इसके हटा देने से संसार में जीते हुए परमधाम का सुख लिया जा सकता है।

ए सुन्या सीख्या पढ़्या, कह्या विचार्या विवेक।
अब जो इस्क लेत है, सो भी और उड़ाए पावने एक।। ३३ ।।

यह सब कुछ मैंने सुना, सीखा और पढ़ा। इस पर विचार भी किया। अब आत्मा जो आपका इश्क ले रही है, वह सब कुछ समाप्त कर एक धनी को पाने के वास्ते ही है।

तो सोहोबत तेरी सत हुई, सांचा तूं मोमिन।
सब बड़ाइयां तुझ को, जो पोहोंचे मजल इन।। ३४ ।।

तभी तुम्हारी दोस्ती सच्ची कहलाएगी और तुम मोमिन कहलाओगे। यदि तुम इस मंजिल तक पहुंच जाओ तो तुम्हारी बड़ी शोभा है।

महामत कहे ए मोमिनों, सुनो मेरे वतनी यार।
खसम करावे कुरबानियां, आओ मैं मारे की लार।। ३५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे वतन के साथियो सुन्दरसाथजी! धनी आप से अहंकार की कुर्बानी चाहते हैं, इसलिए 'मैं' (अहं) मारने के रास्ते पर आ जाओ।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ८९ ॥

मैं बिन मैं मरे नहीं, मैं सों मारना मैं।
किन विध मैं को मारिए, या विध हुई इनसे।। १ ।।

इस संसार की 'मैं' (अहं) धनी की 'मैं' के बिना नहीं मरेगी, अर्थात् संसार से चित्त हटाकर जब धनी में चित्त लग जाएगा तो धनी मेरे हैं यह भाव आ जाएगा और संसार की 'मैं' मिट जाएगी। फिर मुंह से यही निकलेगा धनी के हुकम से हुआ है, हो रहा है और होगा।

Nijanand App